Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, JAN-FEB, 2019, VOL- 6/49

''शिक्षक समुदाय का व्यावसायिक विकास''

डॉ0 अजय कुमार सिंह
असि0 प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग
आर0आर0पी0जी0 कालेज,
अमेठी (उ0प्र0)।

आज के उभरते हुए भारत में होने वाले सामाजिक परिवर्तन तथा वैश्वीकरण की आवश्यकताओं के अनुरूप ''सभी के लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा'' पर बल देना जग–जाहिर है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अदान प्रदान पूर्णतः शिक्षकों की व्यावसायिक गुणवत्ता पर निर्भर करता है। शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के उत्साह, प्रतिबद्धता एवं संरचनात्मक ढ़ांचा, अकादमिक एवं शोध आधारित नवाचारि विचार, विकास तथा सर्जनापूर्ण अध्यापन के क्रियान्वयन पर निर्भर करती है।

'राष्ट्रीय ज्ञान आयोग–2007 का अभिमत है कि शिक्षक, विद्यालय–शिक्षा व्यवस्था के आधार का निर्माण करते हैं। शिक्षण वस्तुतः उच्च कोटि की अकादमिक श्रेष्ठता का प्रतिबिम्बन करता है यह एक ओर तो व्यावहारिक बुद्धिमता विकासता है, दूसरी ओर समन्वित मूल्य–व्यवस्था का भी समर्थन करता है। शिक्षक ही छात्रों के लिए प्रेरणास्रोत होते हैं, और वे ही अपने आचरणादर्शों का प्रभाव छात्र–समुदाय पर डालते हैं। वास्तव में एक शिक्षक से यह अपेक्षित है, कि वह –

1. अपने अध्यापन के सम्बन्धित क्षेत्रों और पाठ्यवस्तु का सम्यक् ज्ञानी हो।
2. शिक्षण–रणनीतियों के पूरे दायरे का परिज्ञान हो, जो कि उनकी शैक्षिक कुशलताओं का भी निर्देशन करें।
3. आत्मालोचन की अभियोग्यता से मण्डित हो
4. दूसरो के सम्मान के प्रति आदरवान हो।
5. उसमें प्रबन्धन की क्षमता हो।

एक अध्यापक का प्रथम और सबसे बढ़कर दायित्व यह है कि वह अधिगमकर्त्ता की अन्तर्निहित सभी शक्तियों और सामर्थ्यों का परिपूर्ण विकास करें। वह इस बात के प्रति भी जागृत हो कि अपने पेशे के प्रति वह जिम्मेदार है, और इस जिम्मेदारी का प्रमाणन इस बात से होना चाहिए कि वह अपने छात्रों में प्रभावकारी अधिगम को प्रोत्साहित कर रहा है। स्पष्ट शब्दों में अपनी व्यावसायिक संलग्नता और दायित्व के प्रति उसे सर्वथा ईमानदार रहना होगा। आधुनिक युग, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (प्ब्ज्) का युग है, जिसने जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रभाव डाला है और दुनियाभर में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक प्रणाली में तेजी से बदलाव किये हैं। इसी तरह अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में संरचना, नीतियों पाठ्यक्रम नियोजन तथा मूल्यांकन प्रणाली आदि में भी परिवर्तन हुए है। अब सवाल उठता है कि कैसे इन चुनौतियों को पूरा किया जाय जो आई0सी0टी0 के कारण हुई। ऐसी चुनौतियों का सामना करने के लिए अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर नवाचारों का संचालन किया जाना चाहिए, क्योंकि नवाचार रचनात्मक पीढ़ी और नये विचारों का अनुप्रयोग है। अतः आज की इस चुनौतीपूर्ण स्थिति पर नियंत्रण हेतु, शिक्षकों के व्यावसायिक कुशलता, दक्षता का विकास अनिवार्य विषय हो जाता है। शिक्षकों को

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नवीन विचार, विधि या तकनीकी जिसे शिक्षक नवीन स्वरूप में अनुभव करते हुए वर्तमान स्थिति में सुधार हेतु इच्छाकृत रूप से अपनाने का प्रयास करता रहे। राष्ट्रीय शिक्षा–निति में भी शिक्षक के महत्व को स्वीकारा गया। इस नीति में कहा गया है –

''किसी समाज में शिक्षकों के स्तर से उसकी सांस्कृतिक सामाजिक स्थिति का पता लगता है। कहा जाता है कि कोई भी राष्ट्र अपने शिक्ष्कों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है।''

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की भूमिका के महत्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा–नीति में शासन और समुदाय द्वारा ऐसी स्थितियॉ उपस्थित करने पर बल दिया गया जिनसे शिक्षको ंको रचनात्मक तथा सृजनात्मक कार्यों के लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन मिले और वे शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोग करने में समर्थ हो। इनको इसकी स्वतन्त्रता भी प्राप्त हो कि वे समुदाय की आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुकूल सम्प्रेषण तथा विभिन्न कार्यों के लिए अधिक उपयुक्त नवीन विधियों और उपायों की खेाज कर अपने व्यावसायिक दक्षता को विकसित कर सके, जिससे समाज अधिक से अधिक लाभान्वित हो सके।

व्यावसायिक गुण– एक अच्छा व दक्ष शिक्षक बनने के लिए व्यावसायिक गुणों का होना भी आवश्यक है जो निम्न है –

1. व्यवसाय के प्रति रूचि, निष्ठा
2. विषय का पूर्ण ज्ञान
3. शिक्षण विधियों का प्रयोग
4. सहायक सामग्री का प्रयोग
5. मनोविज्ञान का ज्ञान
6. ज्ञान पिवासा
7. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रूचि
8. समयनिष्ठता
9. कुशल वक्ता
10. छात्रों के प्रति प्रेम व सहानुभूति

उपरोक्त गुणों से अगर शिक्षक परिचित नहीं है तो वह पूर्ण शिक्षक नहीं हो सकता। आवश्यकता है कि इन सभी गुणों का शिक्षक निरन्तर अनुकरण कर एक श्रेष्ठ शिक्षक की अवधारणा को स्पष्ट कर सकता है क्योंकि अध्यापक बालक का केवल मानसिक विकास ही नहीं करता है अपितु शारीरिक, नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक और अध्यात्मिक विकास भी करता है। अध्यापक राष्ट्र निर्माता है, क्योंकि वह एक सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक चरित्रवान उदार और मर्यादित होता है । देश की संस्कृति के हस्तान्तरण, संरक्षण और संवर्द्धन का मुख्य साधन है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सुखियां, एस0पी0 – शैक्षिक प्रशासन, प्रबन्धन, अग्रवाल पब्लिककेशन्स, आगरा।
2. सिंह, माया शंकर – अध्यापक शिक्षा की चुनौतियॉ आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ।
3. गुप्ता, एस0पी0– भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलहाबाद।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies